

Sh.
108

प्री. सं. ५२१७

५२१७ - (18)

संग्रह स्तोत्र

३ - अ५०

स्तोत्र

उत्तम देवाचार्य (बुरुमुखी लिपि)

प्रा. सं. 4217
संग्रह श्रौत

विमलद... भायसुः यलज... भं पूरि भुतिभिर्दंष्ट्रपूठे
मेष्टु मेधवतः मभगभः भुभितारिदणवसुः पित्त ०
मत्तुमृतिजगमलीयमयसुः पूषणकालिकभिम उभ
भीतिभतिभष्टमवतः धनुतुमभमलंपकमय ३॥ जव
करपथिविसुरिहृगिनुगमभयविरहय विपुज...
उभजतः पूठंलीविउं भउमयट्टमुम ३॥ रंमृदे
भदभेवतुपवद्युक्तिउंमिभुठगेमिकेपरः भउंमिभि
रागीतिमेठउं भनिजकुट्टगनिउउपरम ॥ ॥ ॥
द्वठवद्वयभउगष्टिभंदुललूराऊन उद्वय

मङ्गलननकिमभिधायितः ॥ धर्मसंवाद नक्षत्र ॥ अधिव ॥
 मङ्गलपत्रमभयविमर्शः ॥ पूषाभीमनकोधिकद्विषि ॥
 मङ्गलपूति किमभयं यथा ॥ मङ्गलपूति किमभयं यथा ॥ ००११
 उह उह विषये ॥ दिचिठ ॥ उह उह मपठभीमगीयुतभा ॥
 उह उह गति ॥ यनिठ ॥ मङ्गल ॥ लेक ॥ यनिठ ॥ यनिठ ॥ ००
 मङ्गलमिठ ॥ यमठि ॥ मङ्गल ॥ मङ्गल ॥ मङ्गल ॥ मङ्गल ॥
 मङ्गलमिठ ॥ यमठि ॥ मङ्गल ॥ मङ्गल ॥ मङ्गल ॥ मङ्गल ॥
 यङ्गलमिठ ॥ यमठि ॥ मङ्गल ॥ मङ्गल ॥ मङ्गल ॥ मङ्गल ॥
 उह मङ्गल ॥ यमठि ॥ मङ्गल ॥ मङ्गल ॥ मङ्गल ॥ मङ्गल ॥

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

